RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

वर्ष : 17वां

जुलाई से सितंबर 2024

अंक : 65वां

जिनदेशना के मंगल आयोजन

सवेग जैन, छिंदवाड़ा

संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

जिनदेशना द्वारा आयोजित बाल संस्कार शिविरों की झलकियां

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक
बाल त्रैमासिक पत्रिका

चहकती चेतना

जुलाई से सितंबर 2024

प्रकाशक
श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक
आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.

संपादक
विराग शास्त्री, जबलपुर

प्रबंध संपादक
स्वस्ति विराग जैन, जबलपुर

डिजाइन/ ग्राफिक्स - गुरूदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
डॉ. उज्ज्वला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
श्री अजित प्रसाद जी जैन दिल्ली, श्री विवेक जैन बहरीन

परमसंरक्षक
श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई
श्री प्रेमचंदजी बजाज, कोटा
श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज (उ.प्र.)
श्रीमती कोमल नीरज जैन, नीरू केमिकल्स, दिल्ली

संरक्षक
श्री आलोक जैन, कानपुर
श्री सुनीलभाई. जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.

मुद्रण व्यवस्था
स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 09373294684
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें

www.vitragvani.com

क्र.	विषय	पेज
1	सूची	1
2	हमारे तीर्थ - भातकुली	2
3	संपादकीय	3-4
4	विवाह से वैराग्य	5-6
5	प्रेरक प्रसंग-हुकमचंद/सोच	7
6	अब नहीं जाऊँगा	8-9
7	बाजार में केक का सच	10
8	चेतावनी - फ्रूट जूस.....	11-12
9	प्रेरक प्रसंग - आदमी कौन ?	12
10	हमारी प्यारी कवितायें	13
11	हमारी सांस्कृतिक विरासत	14
12	मनुष्य का भव	15
13	3000 जिंदगियों की रक्षक	16
14	कितनी हानिकारक है पॉलिथीन	17
15	मोबाईल : सुविधा या संकट	18-19
16	श्रीराम की कथा	20-21
17	हमारे गौरव - अमर शहीद मोतीचंद शाह	22-23
18	अब नहीं छपवाऊँगा	24
19	बाजार का भोजन : ना बाबा ना	25
20	जिनदेशना प्रश्नमंच	26
21	समाचार	27-28
22	प्यारी कवितायें	29
23	जन्मदिवस	30
24	चेतन कर्म	31
25	पं. जितेन्द्र राठी का सम्मान	32

सदस्यता शुल्क -500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)
1500/- रू. (दस वर्ष हेतु)

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

हमारे तीर्थ

भातकुली

महाराष्ट्र के विदर्भ में अमरावती जिले में भातकुली नाम का प्रसिद्ध तीर्थ है। इस पहले भोजकुट नगर भी कहा जाता था। यह पहले एक प्राचीन बड़ा शहर था जिसे महाभारत काल के दौरान बसाया गया। यहाँ राजा रुक्मी ने काले पत्थर से बनी भगवान श्री आदिनाथ की आकर्षक प्रतिमा स्थापित करवाई। पुरातत्व के जानकारों के अनुसार यह प्रतिमा लगभग 3000 वर्ष पुरानी है।

इस स्थान पर पत्र शतवाहन, वाकाटक और राष्ट्रकूट साम्राज्य का हिस्सा था। इसके बाद इस क्षेत्र का पतन प्रारंभ हो गया। विक्रम संवत 1156 में मुगल शासकों के आक्रमण से बचाने के लिये इसे किले में जमीन के अंदर छिपा दिया था।

लगभग 700 वर्ष तक प्रतिमा जमीन के अंदर रही। 18वीं शताब्दी में गांव के मुखिया को एक स्वप्न आया कि उस स्थान पर प्रतिमा है। स्वप्न के अनुसार स्थान की खुदाई की गई तो यह प्रतिमा प्राप्त हुई।

यहाँ भगवान आदिनाथ की लगभग 3000 वर्ष पुरानी प्रतिमा भी विराजमान है। इस क्षेत्र पर 3 जिनमंदिर हैं। यहाँ ठहरने की भी समुचित व्यवस्था है। भातकुली अमरावती से 18 किमी, नागपुर से 170 किमी, मुक्तागिरि से 50 किमी की दूरी पर है।

प्रश्न- कुगुरुओं और कुदेवों को पूजने में कितना पाप लगता है ?
उत्तर -असंख्य जीवों की हत्या के बराबर पाप लगता है।

संपादकीय

बच्चों को धैर्य रखना सिखायें वरना ये खतरनाक हो सकता है

परीक्षा में नम्बर कम आने पर 12वीं की छात्रा ने बिल्डिंग से कूदकर की आत्महत्या, नीट के एग्जाम में सफलता न मिलने से दुखी छात्र ने लगाई फांसी, मोबाइल गेम खेलने से रोका तो बेटी ने माँ की हत्या, गोवा में अपने पति से झगड़ा होने पर कम्पनी की सीईओ ने अपनी बेटी को मारा, दादा की डांट से दुखी बच्चे ने घर छोड़ा, नाबालिग लड़के ने पोर्श कार से दो युवा इंजीनियरों को उड़ाया - ये कुछ घटनायें जो पिछले समाचार पत्रों में पढ़ने को मिले। इन समाचारों को पढ़कर मन दुखी हो गया और प्रश्न हुआ कि आखिर ये क्यों हो रहा है? एजुकेशन हब कहे जाने वाले राजस्थान के कोटा शहर में ही 2023 में 29 छात्रों ने आत्महत्या की तो 2024 में अभी तक कुल 11 छात्रों ने। नेशनल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार 2022 में भारत में 13000 छात्रों ने आत्महत्या की। इसमें 18 वर्ष से कम उम्र के 1123 स्टूडेन्ट्स थे।

आखिर हमारे समाज के बच्चों में इतना धैर्य क्यों नहीं है कि वे जीवन की इन छोटी सी घटनाओं को सब कुछ मानकर अपना जीवन समाप्त कर रहे हैं। क्या परीक्षा में नंबर आना ही जीवन की सफलता है? आज उनके आदर्श महान वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन नहीं हैं जो एक बल्ब के आविष्कार करने में एक हजार बार असफल हुये लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी। इन्हीं एडीसन को मंद बुद्धि कहकर स्कूल से निकाल दिया गया था। देश के राष्ट्रपति रहे महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एयरफोर्स के एग्जाम में फेल हो गये परन्तु वे घबराये नहीं परन्तु आज के आदर्श शराब पीकर बेसुध पड़े रहने वाले फिल्मी कलाकार हैं जो एनीमल जैसी घटिया मूवी का निर्माण करते हैं, एकता कपूर जैसी निर्माता भारत की संस्कृति में व्यभिचार का जहर घोल रहीं है।

क्या बढ़िया कार, ऐशो आराम, मंहगे मोबाइल, लग्जरी कपड़े - इनसे ही जीवन को अच्छा माना जायेगा। इन बच्चों में इस सोच को पैदा करने के जिम्मदार काफी हद उनके माता-पिता हैं। जो धन संपत्ति, अच्छी नौकरी सामाजिक स्टेटस को जीवन का सबसे बड़ी सफलता मानते हैं। वे स्वयं तो पूरा जीवन उसमें लगे रहते हैं और अपने बच्चों को उसी की प्रेरणा देते हैं। उनके जीवन में धर्म और उसके मूल्य गौण रहते हैं। हमें ये निर्णय करना है कि शांतिपूर्ण जीवन लक्ष्य है या भोग विलास की वस्तुयें यदि भोग ही मुख्य रखना है तो ये घटनायें समाज में होतीं रहेंगी और शांतिपूर्ण जीवन

लक्ष्य है तो धर्म से दूरी क्यों जिनधर्म ही हमें बताता है कि स्वयं के पुण्य - पाप से अधिक अनुकूलतायें या प्रतिकूलतायें जीवन में आ ही नहीं सकतीं, **भारत के सबसे धनवान व्यक्ति** धीरुभाई अम्बानी ने अपने दोनों बेटों को समान रूप से अपनी अरबों की संपत्ति बांटी परन्तु सगे भाई होने पर भी मुकेश अम्बानी अपने व्यवसाय में सफलता प्राप्त करते गये और अनिल अम्बानी के दीवालिया होने की नौबत आ गई। यदि हम अपने बच्चों को कर्म सिद्धांत की थ्योरी का श्रद्धान करवा पाये तो इन घटनाओं से बच पायेंगे।

पुणे में एक करोड़पति बिल्डर ने अपने 17 वर्ष को लगभग 1.5 करोड़ की कार गिफ्ट दे दी। जिस लड़के का अभी ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं बना था उसने शराब के नशे में 2 बजे रात में सड़क पर बात कर रहे दो युवा इंजीनियरों को टक्कर मार दी जिससे वे दोनों मर गये। इस घटना के पहले उस नाबालिग ने दो पब में जाकर लगभग 1.5 लाख की शराब पी। इस घटना के बाद हुये जनआंदोलन से नाबालिग तो गिरफ्तार हुआ ही साथ ही उसे बचाने के अपराध में दो डॉक्टर, उसके माता-पिता और दादाजी भी जेल चले गये। एक बड़े अपराध ने पूरे परिवार का जीवन अंधकारमय कर दिया।

दूसरी ओर विचार करने की बात यह कि जो युवा मारे गये वे रात को दो बजे सड़क पर क्या कर रहे थे? जो माता-पिता अपनी संतान इस विश्वास के साथ बड़े शहर में पढ़ने या नौकरी करने भेजते हैं कि वे परिवार की मर्यादा का पूरा ध्यान रखेंगे परन्तु बड़े शहरों की हवा में बहकर वे युवा वह सब करने लगते हैं जो आम मध्यवर्गीय परिवार कभी सोच भी नहीं सकता। बोल्ड और स्मार्ट दिखने के लिये पुणे, मुम्बई, बैंगलोर, हैदराबाद, इंदौर जैसे महानगरों के साथ बड़े शहरों में सड़कों पर सिगरेट पीते और बंद कमरों शराब पीतीं लड़कियाँ एक भयावह भविष्य का संकेत कर रहीं हैं।

जैन समाज के लिये एक बुरी खबर है कि एक सर्वे के अनुसार बड़े शहरों में जॉब करने वाली 22 प्रतिशत जैन लड़कियाँ जैन समाज के बाहर शादी कर रहीं हैं और लगभग 5 प्रतिशत लड़कियाँ शादी ही नहीं करना चाहतीं। यदि हमें समय पर सावधान नहीं हुये और अपने बच्चों को समय पर जिनधर्म के संस्कार, नैतिकता, परिवार के प्रति उनके दायित्व, जिम्मेदारियाँ, मनुष्य भव की दुर्लभता आदि नहीं सिखा पाये तो इन घटनाओं का अगला शिकार हमारा ही परिवार होगा।

– विराग शास्त्री

कथा सुनो पुराण की

विवाह से वैराग्य

अठारहवें तीर्थंकर भगवान अरहनाथ के मोक्ष गमन के बाद एक हजार करोड़ वर्ष बीत जाने के बाद भगवान मल्लिनाथ हुये। गृहस्थ अवस्था में मल्लिकुमार ने बाल अवस्था व्यतीत कर युवा अवस्था में प्रवेश किया। कामदेव होने से वे अत्यंत रूपवान थे, उनके शरीर का सौन्दर्य स्वर्ण के समान शोभायमान होता था। उनके रूप को जो भी देखता तो बस देखता ही रह जाता था। जब मल्लि कुमार की आयु 100 वर्ष की हो गई तब उनके पिता महाराज कुम्भ ने एक सुन्दर कन्या देखकर उनका विवाह निश्चित कर दिया और उनके विवाह की तैयारी प्रारंभ कर दीं। मल्लिकुमार के विवाह के लिये मिथिलापुरी राज्य को दुल्हन की तरह सजाया गया। नगर वासियों ने अपने घर के द्वार पर मणियों के वन्दनवार बांधे। भवनों के शिखर पर ध्वज लहराये गये। सभी मुख्य मार्गों पर सुगन्धित जल का छिड़काव किया गया और जगह-जगह कई तरह के संगीत वाद्य यंत्रों से आकाश गुंजायमान हो रहा था।

एक ओर पूरा राजपरिवार और नगरवासी मल्लिकुमार के विवाह की जोरदार तैयारी कर रहे थे तो दूसरी ओर मल्लिकुमार राजभवन के एकान्त में बैठे हुये महल और नगर की सजावट देख रहे थे। अपने जातिस्मरण ज्ञान से वे सोचने लगे - विवाह एक मीठा बंधन है तो मैं क्यों अपनी स्वाधीनता छोड़कर बंधन के मार्ग पर जाऊँ ? क्या मैं अपने जीवन को इस संसार के जाल में फंसा दूँ ? ऐसा लगता है कि यह विवाह मेरी आत्म भावना और स्वतंत्रता को नष्ट कर देगा। नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता, मैं दिगम्बर दीक्षा लेकर आत्मकल्याण के मार्ग पर बढूँगा लेकिन मेरे माता-पिता और नगरवासी मेरे इस निर्णय को सुनकर दुःखी जायेंगे विवाह के इतने पास आने पर मेरे मना करने पर उनका मन बहुत दुःखी होगा लेकिन उनके दुःखी होने पर क्या मैं अपना सुख का मार्ग छोड़ दूँ? वे तो बस पर्याय के साथी हैं अनादि काल से मेरे साथ कौन था और आगे भी कौन रहेगा ? मेरा सुख-दुख मेरे परिणामों के आधीन है। मैं दृढ़ प्रतिज्ञा

करता हूँ कि मैं भोगों के मार्ग पर न चलकर निर्ग्रन्थ मार्ग पर आगे बढ़ूँगा।

और उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति जानकर सब आश्चर्यचकित रहे गये। लौकान्तिक देवों ने उनकी इस भावना का अनुमोदन किया। सौधर्म इन्द्र ने आकर दीक्षा कल्याणक का उत्सव मनाना प्रारंभ कर दिया। पिता राजा कुम्भ को मल्लिकुमार का निर्णय सुनकर बहुत दुख पहुँचा। विवाह की तैयारियाँ बंद कर दीं गईं। नगर का उत्साह का वातावरण अब शांत रस में परिवर्तित हो गया। देवों द्वारा लाई गई 'जयंत' नाम की पालकी में बैठकर मल्लिकुमार ने वन को प्रस्थान किया और 'नमः सिद्धेभ्यः' कहकर मुनि दीक्षा ले ली। दीक्षा धारण करने के मात्र 6 दिन बाद उन्हें केवलज्ञान हो गया और उन्होंने अनेक स्थानों पर विहार कर तत्व उपदेश दिया। अपनी आयु के अंत में एक माह शेष रहने पर वे सम्मेदशिखर पहुँच गये ओर प्रतिमा योग धारण कर लिया। फाल्गुन शुक्ल पंचमी के दिन निर्वाण की प्राप्ति की।

इशारा

बहू की प्रशंसा

पड़ोसन - आपकी नई बहू कैसी है

सास - बहुत अच्छी है, इतनी गर्मी में भी दिन रात लगी रहती है, केंडी क्रश गेम के 252 लेबल तक पहुँच गई है। व्हाट्सएप के 25 ग्रुप चलाती है, फेस बुक पर 4500 दोस्त हैं, 16 ग्रुप की एडमिन है, 1500 फालोअर्स हैं और मेहनती तो इतनी है कि इंस्टाग्राम और ट्विटर भी संभालती है।

इतना करने पर भी रुकती नहीं है। इनसे जब थोड़ा टाइम मिलता है तो वीडियो रील बनाकर पोस्ट करती है।

सोच रही हूँ कि सुबह दूध में बादाम पीस कर देने लगूँ।

पड़ोसन बेहोश।

प्रेरक प्रसंग

सर सेठ हुकुमचंदजी की महानता

लगभग सन् 1940 में इंदौर के प्रसिद्ध सेठ श्री हुकुमचंदजी देश में अपनी अथाह संपत्ति के साथ अपनी उदारता के लिये विख्यात थे। वे इतने धनवान थे कि अंग्रेज सरकार भी इनसे धन उधार के रूप में लेती थी। उन्होंने अपने जीवन में अनेक परोपकार के कार्य किये। उन्होंने इंदौर में जैन धर्म के अध्ययन के लिये गुरूकुल की स्थापना की और अपनी मृत्यु के पूर्व लिखा -

1. मैंने इस गुरुकुल की के संचालन के लिये विशाल राशि का फंड बना दिया है अतः मेरे मरने के बाद इस राशि से गुरुकुल चलाते रहना।
2. यदि यह फंड समाप्त हो जाये तो तेरी विशाल संपत्ति को बेच देना और गुरुकुल चलाते रहना।
3. यदि संपत्ति बेचकर मिली संपत्ति मिल जाये तो मेरे पुत्रों के पास चले जाना वे निश्चित रूप से सहयोग करेंगे।
4. यदि किसी कारण से मेरे पुत्र धन न दें तो मैं झोली फैलाकर भीख मांगता हूँ कि समाज के कोई व्यक्ति आगे आना और गुरुकुल को चलाते रहना मैं आपका धन चुका दूँगा, मेरा जहाँ पुनर्जन्म होगा तो मैं नौकर बनकर आपका ऋण चुका दूँगा, मुझे बैल बनकर भी आपका ऋण चुकाना पड़े तो मैं चुका दूँगा किन्तु ज्ञानदान का यह मिशन किसी भी हालत में चलते रहना चाहिये।

सोच

देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के समर्पण और ईमानदारी की अनेक कहानियाँ हैं। वे प्रधानमंत्री बनने के भारत के रेल मंत्री थे। उन्होंने अपनी माँ को यह बताया कि मैं रेल्वे में नौकरी करता हूँ। एक बार शास्त्रीजी अपने मंत्रालय के किसी कार्यक्रम में रेल भवन आये तब उनकी माँ भी किसी के साथ वहाँ आ गईं और उन्होंने सुरक्षा अधिकारी से पूछा कि मेरा बेटा लालबहादुर यहाँ आया है वह भी रेल्वे में नौकरी करता है। सुरक्षा अधिकारी शास्त्रीजी की माँ को नहीं पहचानता था उसने कहा कि आप झूठ बोल रहीं हैं। माँ की जिद पर सुरक्षा अधिकारी उन्हें शास्त्रीजी के सामने ले गये और पूछा यह माताजी स्वयं को आपकी माँ कह रहीं हैं। तब शास्त्रीजी ने कहा - हाँ ये मेरी माँ हैं। शास्त्रीजी ने अपनी माँ को अपने पास बिठाया और थोड़ी देर बाद उन्हें घर भेज दिया। तब पत्रकारों ने पूछा कि आपने अपनी माँ के सामने भाषण क्यों नहीं दिया तो वह बोले कि मेरी माँ को नहीं पता कि मैं रेल मंत्री हूँ। अगर उन्हें पता चल जाये कि मैं मंत्री हूँ तो वह लोगों से सिफारिश करने लगने लगेंगी और मैं मना नहीं कर पाऊँगा और उन्हें अहंकार भी हो जायेगा।

अब नहीं जाऊँगा

पापा! बहुत बोर हो रहा हूँ और साथ में खेलने के लिये कोई दोस्त भी नहीं है।

तो पढ़ाई करो....

पापा! पढ़ाई तो हमेशा करता हूँ, वो तो करना ही है पर मूड फ्रेश भी होना चाहिये।

तो बेटेजी! आप ही बतायें हमें आपका मूड फ्रेश करने के लिये क्या करना चाहिये ?

पापा! ये देखो आज के न्यूज पेपर में आया है कि अपने रेल्वे ग्राउंड में सर्कस आया है। पापा चलो न बहुत मजा आयेगा।

अच्छा! तो ये बताओ वहाँ क्या करोगे ?

अरे! वहाँ सब जानवरों को देखेंगे और देखिये इसमें लिखा है भालू का डांस और शेर का स्टंट भी देखने को मिलेगा। हाथी फुटबाल खेलता है, तरह-तरह के सुन्दर-सुन्दर पक्षी हैं जो साइकिल चलाते हैं।

पापा, चलो न प्लीज।

ओके। क्या तुमको लगता है सर्कस देखना अच्छी चीज है....

मुझे समझ नहीं आता इसमें बुरा क्या है आखिर सर्कस हमारे मनोरंजन के लिये ही लिये तो आया है।

नीरव तुम तो पाठशाला गये हो, बालबोध पाठमाला भी पढ़ी है। ये बताओ कि हिंसा करना बुरा है या अच्छा ?

बिल्कुल बुरा है लेकिन सर्कस जाने में कौन सी हिंसा हो रही है ?

नीरव ! क्या तुम जानते सर्कस के भालू को डांस कैसे सिखाते हैं?

नहीं पता..।

भालू को जंगल से पकड़कर उसे कई दिन भूखा रखते हैं। थोड़ा-थोड़ा भोजन देते हैं और गरम तवे पर खड़ा करते हैं वह बेचारा गरम तवे पर

बार-बार पैर ऊपर करता है और डांस सिखाने वाला इस तरह उसे डांस सिखाता है इसी तरह शेर को कई दिन भूखा रखते हैं, शेर भी समझने लगता है कि स्टंट करने पर भी भोजन मिलेगा तो वह मजबूरी में स्टंट करना सीखता है। हाथी को भूखा रखकर फुटबॉल खेलना सिखाते हैं।

पापा! ये तो मुझे पता ही नहीं था ये तो गलत बात है।

और नीरव ! तुम्हें ये भी पता होना चाहिये कि इन शेरों को भोजन के लिये मांस दिया जाता है इसके लिये न जाने कितने गायों, बकरों को मारा जाता है। हमें इस हिंसा की अनुमोदना महापाप लगता है।

लेकिन पापा! इस सर्कस से लोगों का रोजगार भी तो मिलता है और अनेक जानवरों को भोजन भी मिलता है ना।

नीरव ! किसी की हिंसा करके, किसी को दुःख देकर कोई भी आजीविका अच्छी नहीं है और उन जानवरों और पक्षियों को उनके परिवार से अलग करके उन्हें क्या सुख मिलेगा तुम्हें कोई तुम्हारे परिवार से अलग करके जेल में डाल दे और सारी सुविधायें दे तो क्या तुम्हें खुशी मिलेगी ?

नहीं मिलेगी

तो हमें किसी जीव को उसके परिवार से अलग करने का क्या अधिकार है और हमारी एन्ट्री फीस से मांस खरीदकर ये उन जानवरों को खिलाते हैं। उसका भी हमें पाप लगता है।

पापा ! यदि सर्कस बंद हो जायेंगे तो उनके सभी कर्मचारी बेरोजगार हो जायेंगे..।

बेटा! यही लॉजिक कत्लखाने और शराब की दुकानों पर लगा सकते हैं क्या ?

नहीं पापा।

किसी बात को सिद्ध करने के लिये गलत लॉजिक नहीं दे सकते। कुछ समझे या नहीं ?

समझ गया पापा। मैं अब सर्कस जाने की बात कभी नहीं करुँगा और अपने पाङ्गशाला के दोस्तों से भी कहूँगा कि वे सर्कस कभी न जायें।

अब रही बात बोरियत दूर करने की तो मैं तुम्हारे साथ खेलता हूँ

वाह ये हुई न बात।

– विराग शास्त्री

बाजार के केक का सच....!

आजकल हमारे परिवारों में हर प्रसंग पर केक काटने की परम्परा चल रही है। चाहे किसी का बर्थडे हो या एनीवर्सरी, चाहे गृह प्रवेश हो या किसी परीक्षा में सफलता - केक काटना एक फैशन बन गया है। पहली बात केक काटना हमारी भारतीय संस्कृति नहीं है। 'काटना' शब्द भी हमारी जैन संस्कृति का परिचायक नहीं है। हमारे यहाँ सब्जी को सुधारना या संवारना कहा जाता है काटना नहीं।

आजकल देखादेखी का दौर चल रहा है। किसी काम को करने के पीछे कोई लॉजिक नहीं सोचते बल्कि टीवी सीरियल्स की नकल करके अपने को माडर्न मानते हैं। आजकल हर मिडिल क्लास शहर में बेकरी की कई दुकानें होतीं हैं जहाँ हमेशा ताजा केक उपलब्ध होता है। विचार करने वाली बात यह है कि बाजार में इतने सस्ते और आकर्षक कैसे मिल जाते हैं? बेकरी में दूध नहीं आता और बिना दूध के 15 मिनिट में केक तैयार मिल जाता है। पर किसी को नहीं पता कि केक में आखिर क्या मिलाया जाता है? पहले मेडा ईस्ट, तेल, दूध आदि को मिक्स करके इन्हें गर्म करके दूध से निकली क्रीम को बर्तन में रखकर इतना फेटा जाता था कि वह चार गुना हो जाती थी, इसे ही व्हिप्ड क्रीम कहा जाता था।

लेकिन अब केक प्रीमिक्स नाम का तैयार पाउडर लेते हैं जिसमें पानी मिलाया जाता है और इसे ओवन में रख देते हैं और बेक होने के बाद उस पर क्रीम लगाकर सजा देते हैं और कुछ ही समय में सॉफ्ट केक तैयार हो जाता है। केक प्रीमिक्स पाउडर में अनेक तरह के केमिकल मिलाये जाते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिये घातक होते हैं। ये केमिकल्स आर्टिफिशियल फ्लेवर होते हैं जिसे फूड स्टेबलाइजर अर्थात् कीटनाशक केमिकल भी कहा जा सकता है और वर्तमान में केक पर लगाने के लिये जिस क्रीम का प्रयोग होता है वह भी दूध की नहीं बल्कि केमिकल की बनाई जाती है। जिस तरह वाशिंग पाउडर को पानी में डालकर हिलाने से झाग बन जाता है इसी तरह क्रीम बन जाती है। असली दूध की क्रीम के खाने पर कुछ खाने का एहसास होता है, जैसे आप घी या मलाई खा रहे हों परंतु केमिकल वाली क्रीम मुंह पर रखते ही खुल जाती है।

दूसरी बात इन केमिकल्स में अधिकांश नॉनवेज अर्थात् मांसाहारी होते हैं जिसे खाकर शाकाहारी व्यक्ति भी अपना स्वास्थ्य और धर्म दोनों को नष्ट कर रहा है।

तो बन्धुओ, जीभ के थोड़े से स्वाद के लिये मांस का सेवन न करें और अपने स्वास्थ्य की भी सुरक्षा करें। घर का बना केक ही प्रयोग करें।

चेतावनी
फ्रूट जूस नहीं बल्कि चीनी का घोल पी रहे हैं लोग...

पूरी दुनिया में पैकेज्ड फूड का बाजार बढ़ता जा रहा है। सुपर मार्केट और मॉल में रियल फ्रूट, एनर्जी ड्रिंक्स, हेल्थ ड्रिंक्स के पैकेट और बोतलें भरी हुईं हैं। यह सस्ता भी है और आसानी से उपलब्ध हो जाता है और सबसे बड़ी बात की घर में बनाने का झंझट भी नहीं और स्वाद में घर से बेहतर। इतना ही नहीं, कम्पनियों का दावा है कि स्वास्थ्य के लिये ये ड्रिंक्स अच्छे भी हैं और जरूरी भी।भ्रम फैलाने के लिये फिल्मों के बिकाऊ अभिनेताओं से इनके विज्ञापन भी करवाये जाते हैं जो यह कहते दिखते हैं कि मेरी ताजगी का राज ये हेल्थ ड्रिंक्स हैं, इसे वे रोज पीते हैं। ये वे अभिनेता हैं तो धन के लोभ में जहर भी हंसकर बेच देते है और तो और हॉस्पिटल्स में मरीजों को ये पैकेज्ड जूस दिये जा रहे हैं।

लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये जूस हमें सेहतमंद मनाने की जगह बीमार कर रहे हैं। ऐसा हम नहीं कह रहे बल्कि यह कहना है भारत की सबसे पुरानी और विश्वसनीय हेल्थ रिसर्च बॉडी इंडियन काउंसिल ऑफ मेडीकल रिसर्च का।

उन्होने कहा है कि अगर हम पैकेज्ड फूड के लेबल देखकर इनको पी रहे हैं तो अपने स्वास्थ्य के खिलवाड़ कर रहे हैं क्योंकि पैकेज्ड फूड के लेबल भ्रम फैलाने वाले और गलत भी हो सकते हैं। रियल फ्रूट जूस बताकर बेचे जा रहे जूस के पैकेट में सेब, अनार, लीची या आम का रस नहीं बल्कि ढ़ेर सारी चीनी घोली जाती है और इन फलों का आर्टिफिशियल फ्लेवर मिलाया गया हे तभी ये जूस फलों के मुकाबले इतने सस्ते भी हैं और इतने मीठे भी। प्राकृतिक फलों के जूस को बिना केमिकल के लम्बे समय तक सुरक्षित रखना असंभव है। लोग भी आकर्षक विज्ञापन देखकर मोहित हो जाते हैं। दूसरे प्रकार से धीमा यह जहर हैं।

रिसर्च के अनुसार शुगर फ्री टैग के साथ बिक रहे फूड आईटम्स भी हमारे साथ धोखा हैं। इनमें रिफाइंड फैट, प्योरीफाइड, आर्टिफिशियल न्यूट्रिएंटस और यहाँ तक कि चीनी भी मिली हो सकती है। यह सब हमारे शरीर के लिये घातक हैं और जैन धर्म के अनुसार अभक्ष्य भी।

जयपुर के नारायणा हॉस्पिटल के डॉ. अभिनव गुप्ता के अनुसार पैकेज्ड फूड को लम्बे समय तक रखने के लिये प्रिजर्वेटिव्स मिलाये जाते हैं। छोटे बच्चों को ये बिल्कुल नहीं देना चाहिये। छोटे बच्चों के लिये बाजार के जूस और पैकेज्ड जूस खतरनाक हैं क्योंकि उनकी इम्यूनिटी कमजोर होती है और उनका शरीर बनने की प्रक्रिया में है। नकली चीजें खिलाने से उनके शरीर की बुनियाद ही कमजोर हो जायेगी। इससे पहले सेरेलेक में अधिक शुगर मिलाने के कारण उस पर कार्यवाही हुई थी, इसी तरह बोर्नवीटा के बारे में भारत सरकार ने हेल्थ ड्रिंक्स के नाम से न बेचने का आदेश दिया था।

अलर्ट 1 दिन में 250 एमएल से ज्यादा कोल्ड ड्रिंक पीना सेहत के लिए हानिकारक

भारत में बिकने वाली कोल्ड ड्रिंक में चीनी निर्धारित से 5 गुना ज्यादा

फिर क्या करें -

घर में बनाये गये भोजन और जूस से अच्छा स्वास्थ्य के लिये कुछ नहीं हो सकता है। यह स्वास्थ्यवर्धक भी है और धर्म के अनुसार भक्ष्य भी हैं इसलिये अपने स्वास्थ्य की सुरक्षा भी कीजिये और धर्म की भी।

प्रेरक प्रसंग

आदमी कौन ?

सेठजी, जरा पानी पिला दीजिये न।
रुको, अभी आदमी नहीं है।
(थोड़ी देर बाद) पानी पिला दो न सेठ जी।
बोला न रुको, अभी आदमी नहीं है।
(5 मिनिट बाद) सेठजी बहुत जोर से प्यास लग रही है अब सहन नहीं हो रहा। थोड़ा पानी पिला दीजिये न।
अरे, तुमसे कितने बार कहा, अभी आदमी नहीं है जब आदमी आयेगा तब पानी दे देगा।
सेठजी थोड़ी देर के लिये आप ही आदमी बन जाइये न।
ग्राहक की बात सुनकर सेठजी चुप हो गये।

प्यारी कवितायें

मुनिराजों का पर्व

मुनि अकंपन स्वामी आदि सात शतक आये मुनिराज।
उपसर्ग किया बलि राजा ने तब, रक्षा की विष्णु मुनिराज।
भाई बहिन का पर्व नहीं यह, नही रागियों का त्यौहार।
नहीं राग से दूषित करना, पर्व धर्म रक्षा का आज।
यह वात्सल्य पर्व कहलाता, मुनिराजों का यह त्यौहार।
जिनशासन रक्षा करने, भविजन रहें सदा तैयार।।

मुनिरक्षा का मंगल पर्व रक्षाबंधन मुनिराजों के उपसर्ग निवारण का पर्व है अतः मुनिराजों की स्मृति में 12 अगस्त से 19 अगस्त के लिये कोई विशेष नियम लें। प्रतिदिन उठने के बाद और सोने के पूर्व दिगम्बर मुनिराजों को याद करें और भावना करें कि वीतरागी मुनिभगवंतो पर कोई उपसर्ग न आये। रक्षाबंधन के दिन पहले मुनिराजों की पूजन करें बाद में लौकिक परम्परा निभायें।

शाश्वत पर्व

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव सत्य शौच संयम तप त्याग।
आंकिचन्य ब्रह्मचर्य दश, से सुरभित हो सकल समाज।
बाल युवा किशोर वर्ग भी, जिन श्रुत मंत्र सुनें गुणवान।
संयम त्यागमय जीवन हो, वीतराग का हो गुणगान।
जिनपूजन की विधि भी जानें, जिनवर भक्ति मंगलकार।
तत्वज्ञान की पावन वर्षा, जिनश्रुत शीतल बहे बयार।
धर्मोत्सव रसपान करें सब, दश धर्मों की जय जयकार।।

- विराग शास्त्री

हैदराबाद के पास 1000 साल पुरानी प्रतिमायें

एक समय पूरे विश्व में जैनत्व का वैभव था इसके प्रमाण समय - समय पर हमें मिलते रहे हैं। हैदराबाद के पास रंगारेड्डी जिले के इनिकेपल्ली गांव के तालाब के पास जैन प्रतिमायें प्राप्त हुईं। दो स्तंभों के चारों कोनों चार जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ खुदीं हुईं पाईं गईं। इस पर एक शिलालेख भी मिला जिससे ज्ञात होता है कि यहाँ एक मठ था जो राष्ट्रकूट और वेमुलावाड़ा चालुक्य काल के दौरान के समय में चिलुकुरु के पास यह मठ जैनों का प्रमुख केन्द्र था।

महाकाल मंदिर में जैन धर्म के अवशेष

उज्जैन में हिन्दुओं का विश्व विख्यात मंदिर महाकाल मंदिर है इसे महाकालेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। इस मंदिर के बाईं ओर के द्वार (गेट) के ऊपर एक जैन प्रतिमा को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

इसी तरह तमिलनाडु के मदुरै में यनामलाई पर्वत है। यहाँ एक मुनियांडी मंदिर है जो उस क्षेत्र में बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ एक प्रतिमा को देवी के रूप में मानकर पूजा जाता है और पशुओं की बलि दी जाती है। यह मूलतः दिगम्बर जैन प्रतिमा है।

छत्तीसगढ़ के अड़भार में अष्टभुजी शक्तिपीठ है जो कि हिन्दुओं को प्रसिद्ध आराध्य स्थल है। यहाँ मूलरूप से दिगम्बर जैन प्रतिमा है जिसका स्वरूप बदलकर हिन्दू प्रतिमा बना दिया गया है।

मनुष्य भव की कीमत

एक राजा जंगल में भटक गया और उसे बहुत जोर से प्यास लगी। उसे पास में एक लकड़ी काटने वाला लकड़हारा मिला। राजा ने लकड़हारे से पानी मांगा तो लकड़हारे ने उसे कुंये का माठा जल पिलाया। राजा जल पीकर बहुत संतुष्ट हुआ और उसने प्रसन्न होकर कहा - जब तुम्हें कोई भी आवश्यकता हो तो राजमहल चले आना। इतना कहकर राजा राजमहल चला गया।

कुछ साल बाद लकड़हारे के घर में आग लगने से उसका बहुत नुकसान हो गया। वह राजा के पास गया और महाराज! मैं वही लकड़हारा हूँ जिसने आपको पानी पिलाया था। आग लगने से मैं बरबाद हो गया हूँ मेरी सहायता कीजिये। राजा ने अपना वचन निभाया और उस लकड़हारे की गरीबी दूर करने के लिये उसे चंदन को पेड़ों का एक बाग दे दिया उसमे बहुत सारे चंदन के पेड़ थे। लकड़हारा रोज चंदन के पेड़ के काटकर उस जलाता और उसका कोयला बनाकर बेचने लगा। कुछ दिन में ही उसने सारे पेड़ जला दिये।

एक दिन राजा वहाँ से निकला तो उसने देखा कि चंदन के सारे पेड़ कट चुके हैं और मात्र एक ही पेड़ बचा है। उसने लकड़हारे को डांटा तो लकड़हारे ने राजा को बताया कि मुझे चंदन के पेड़ की कीमत की जानकारी नहीं थी। राजा ने प्यार से समझाते हुये कि जो हुआ सा हुआ । अब तुम्हारे बाग में चंदन का एक ही पेड़ बचा है। इसके टुकड़े बेचकर तुम धनवान बन सकते हो। लकड़हारे ने ऐसा ही किया और धनवान बन गया।

हम भी अपने अमूल्य नर भव को क्रोध आदि कषायों में, पाँच पापों में और संयोग एकत्रित करने में गंवा रहे हैं। अभी भी समय है कि हम अपने शेष जीवन को जिनधर्म की प्रभावना और आत्म आराधना में लगा दें तो हमारा आने वाला अनंत काल सुन्दर और शांतिमय होगा।

प्रेरणा

3000 जिंदगियों की रक्षक

पलक मुच्छल

मखमली आवाज की मलिका पलक मुच्छल बॉलीवुड की प्रसिद्ध गायिका है। जैन समाज की बेटी पलक 4 वर्ष की उम्र से गाना गा रही है और देश-विदेश के सैंकड़ों नगरों में संगीत शो कर चुकीं हैं। मध्यप्रदेश के इंदौर शहर की रहने वाली पलक आज गायिका की दुनिया का प्रतिष्ठित नाम है। पलक ने अपने जीवन का एक मिशन बनाया है वह है छोटे बच्चों की हार्ट सर्जरी करवाने का।

7 वर्ष की उम्र में पलक को किसी बच्चे के बारे में मालूम चला कि उसके दिल में छेद है, उसके इलाज में लाखों का खर्च था और उसके पिता आर्थिक कमजोरी के कारण उसका ऑपरेशन नहीं करवा पा रहे थे। पलक ने उसी क्षण अपनी कमाई में से दान देकर उस बच्चे का ऑपरेशन करवा दिया। ऑपरेशन के बाद उस बच्चे और परिवार के चेहरे की खुशी ने पलक को इतना प्रभावित किया कि उसने इस कार्य को अपने जीवन का मिशन बना लिया। इस कार्य में उनके भाई पलाश भी पूरा सहयोग करते हैं। इस कार्य में उनके माता अनीता-पिता राजकुमारजी ने पूरा सपोर्ट किया।

32 वर्षीय पलक अपने खर्च पर अब तक 3000 बच्चों की हार्ट सर्जरी करवा चुकी है। 11 जून को पलक ने 3000 वें बच्चे आलोक साहू की हार्ट सर्जरी करवाई। उसके इस काम की प्रशंसा केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों, अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं, व्यक्तियों के साथ बॉलीवुड अभिनेता आमिर खान, सलमान खान भी कर चुके हैं। पलक के इस कार्य को गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड बुक और लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में भी आ चुका है। जिन बच्चों का इलाज पलक ने करवाया उनमें अनेक बच्चे डॉक्टर बन चुके हैं और वे भी अन्य बच्चों की सहायता कर रहे हैं। पलक छोटी उम्र में ही कारगिल युद्ध में शहीदों के परिवारों और भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिये स्टेज शो चुकीं हैं।

पलक के इस अद्‌भुत कार्य के लिये चहकती चेतना परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

कहानी

पर्यावरण मित्र

कितनी हानिकारक पॉलिथिन!

मुकुल त्यागी, भोपाल (म.प्र.)

अरे मोनू यह पक्षी तुम लोगों को कहां से मिली? पक्षी में पानी भरकर खेल रहे बच्चों से मोनू की मां ने ऊंचे स्वर में पूछा। "मां इसमें पप्पू और पिंकी बिस्किट लेकर आए थे, जो हमने खा लिए" मोनू ने उत्तर दिया। "इधर लाओ यह पक्षी, इसको फेंको। इसका उपयोग बंद हो रहा है, यह बहुत हानिकारक है।" मोनू की मां ने कहा और बच्चों से पक्षी लेकर उसे कचरे के डिब्बे में डाल दिया। "मां पॉलिथिन का उपयोग क्यों बंद हो रहा है? हमें बताओ।" बच्चों ने जिद की तो मां बोली- "अच्छा ध्यान से सुनो, पॉलिथिन आज सबसे बड़ी समस्या बन गई है, इसका बढ़ता उपयोग न केवल वर्तमान, बल्कि भविष्य में भी पर्यावरण के लिए बहुत अधिक हानिकारक है।"

अच्छा मां फिर तो इस पर जरूर सोचना पड़ेगा... परंतु ज्यादा उपयोग कैसे हो रहा है, हमें यह भी बताइए ना? मोनू ने उत्सुकता से पूछा। "सुनो! पहले जब हम खरीदारी करने जाते थे तो कपड़े का थैला साथ लेकर बाजार जाते थे, लेकिन आज सब खाली हाथ जाते हैं और दुकानदार से पॉलिथिन मांगकर उसमें सामान लाते हैं, इसलिए पॉलिथिन का बहुत ज्यादा उपयोग हुआ ना!"

पॉलिथिन व प्लास्टिक गांव से लेकर शहर तक के लोगों की सेहत बिगाड़ रही है। शहर की ज्यादातर नालियां पॉलिथिन की वजह से बंद हो जाती हैं। नदियां और नाले इन्हीं पन्नियों के कारण प्रदूषित होते हैं, पानी के साथ पशुओं के पेट में जाकर यह उन्हें बीमार करती हैं। गर्म खाद्य सामग्री इसमें रखने से केमिकल मनुष्यों के पेट में पहुंचता है। पॉलिथिन बनाने के लिए कई प्रकार के जहरीले केमिकल्स का उपयोग किया जाता है। मां ने अच्छी तरह बताया। "अच्छा मां हमें तो पॉलिथिन के बारे में इतनी ज्यादा जानकारी नहीं थी" मोनू बोला। ".....और चाची जी जब सबको पता है कि प्लास्टिक इतना नुकसानदायक है, फिर भी सभी इसका उपयोग कर रहे हैं! आज सभी के घरों में कचरा पॉलिथिन में भरकर फेंका जाता है..." पप्पू और पिंकी बोले। "ठीक कहा तुमने, फिर इसके परिणाम भी तो दुष्कर होते हैं। कचरे के ढेर से पशु-पक्षी इन्हें भोजन के साथ खा लेते हैं और बीमार हो जाते हैं, फिर दम तोड़ देते हैं।"

यह पर्यावरण के लिए भी बहुत हानिकारक है। कभी नष्ट न होने वाली पॉलिथिन भूमि के जल स्तर को भी प्रभावित करती है। इसके उपयोग से बचना चाहिए। मां ने आगे कहा कि अब तुम सब प्रतिज्ञा करो कि पॉलिथिन का उपयोग बिल्कुल भी नहीं करोगे। सभी बच्चों ने एक साथ कहा- हम आज से ही प्रतिज्ञा करते हैं कि पॉलिथिन का उपयोग बिलकुल नहीं करेंगे और अपने दोस्तों को भी इसके नुकसान के बारे में बताएंगे। सुनकर मोनू की मां मुस्कुरा दीं और उन्होंने सबको शाबाशी दी। ▪▪

मोबाईल : सुविधा या संकट

मोबाइल पर पब खेल रहे बेटे ने अगर पिता का कॉल नहीं काटा होता, तो शायद मां की जान बच जाती

मोबाइल आज हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है इसके बिना बैंक, व्यापार, स्कूल, परिवार के समाचार, बिल आदि कई लौकिक जीवन के काम तो संभव हैं नहीं साथ ही धार्मिक पक्ष से स्वाध्याय, धार्मिक शिविर-विधान आदि का लाभ भी ऑनलाईन मिलता है इसलिये मोबाइल से दूरी असंभव होती जा रही है। मोबाइल का प्रयोग एक ओर कई काम आसान बना रहा है तो दूसरी ओर अनेक समस्यायें और संकट भी पैदा कर रहा है।

बढ़ते अपराधों में भी मोबाइल की महत्वपूर्ण भूमिका है ही साथ परिवार में बहूओं और बच्चों के द्वारा आवश्यकता से अधिक मोबाइल का प्रयोग विवादों का कारण बन रहा है। फेस बुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसे सोशल प्लेटफार्म पर समय की भयंकर बरबादी होने के साथ स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव हो रहा है। कानपुर के मेडीकल की रिपोर्ट के अनुसार मोबाइल का ज्यादा प्रयोग करने वाले लगभग 80 प्रतिशत लोग न्यूरॉल्जिया नसों का दर्द का शिकार हो चुके हैं। इसमें कई मरीजों को हाथों और कोहनी में असहनीय दर्द हो रहा था। वर्क फ्रॉम होम के कल्चर ने लेपटॉप और मोबाइल पर युवा घंटों काम कर रहे हैं जिससे गर्दन की डिस्क बल्क के कारण कई नर्व के खून संचार में परेशानी हो रही है।इससे कई बार उनके कंधे और गर्दन सुन्न जैसे हो जाते हैं। इलाज के लिये आईं 37 प्रतिश महिलाओं में सर्वाइकल बीमारी के गंभीर लक्षण मिले।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के ऑर्थोपेडिक और एनेस्थीसिया विभाग की रिसर्च में खुलासा

मोबाइल और लैपटॉप से 80% लोग न्यूरॉल्जिया के शिकार

स्वास्थ्य

बढ़ता हुआ स्क्रीन-टाइम अब नजरों को कमजोर कर रहा है

प्रख्यात चिकित्सक डॉ. चंद्रकांत लहरिया के अनुसार बच्चों का मोबाइल पर बढ़ता स्क्रीन टाइम उनकी नजरों को कमजोर कर रहा है। भारत में लगभग 20 प्रतिशत बच्चे चश्मे का प्रयोग कर रहे हैं इसका मुख्य कारण पढ़ाई के साथ घंटो गेम खेलना और यू ट्यूब देखना है। लगातार मोबाइल देखते रहने उनकी पलकें कम झपकतीं हैं जिसके कारण से आंखों का पानी सूख रहा है जो कि स्वस्थ आंखों के लिये अतिआवश्यक है।

स्वास्थ्य समस्या के साथ मोबाइल परिवार बिखरने की समस्या का बड़ा कारण बनता जा रहा है। 15 जून को जबलपुर को नवमीं में पढ़ने वाली 14 वर्षीय इकलौती संतान आरुषि सिंह को उसकी माँ सुनंदा सिंह ने मोबाइल पर अधिक गेम खेलने पर डांटा तो आरुषि ने आत्महत्या कर ली। आरुषि के पिता की कोविड में मृत्यु हो गई थी। अब उसके घर में माँ अकेली रह गई है।

इंदौर के अस्सिटेंट कमिश्नर दीपक श्रीवास्तव की पत्नी श्रीमति रंजना डिप्रेशन का शिकार थीं। एक दिन उन्होंने अपने पति दीपक को ऑफिस फोन किया कि मैं अब बहुत परेशान हो गईं हूँ और मरने जा रही हूँ और फोन काट दिया। दीपक ने ऑफिस से भागते हुये अपने बेटे को फोन लगाया। घर पर ही मोबाइल पर गेम खेल रहे बेटे शिवम को दो बार फोन लगाया तो उसके बेटे ने गेम पूरा करने के लिये फोन काट दिया। जब उसके पिता घर पहुँच तब तक उनकी पत्नी फांसी लगाकर आत्महत्या कर चुकी थीं। यदि शिवम अपने पिता का फोन उठाया होता तो शायद उसकी माँ की जान बच जाती।

मोबाइल पारिवारिक सम्बन्धों में भी समस्यायें पैदा कर रहा है। उत्तरप्रदेश के छोटे से शहर गोहाना में मोबाइल पर बात करने से टोकने पर महिलायें थाने में सास-ससुर के विरुद्ध पुलिस रिपोर्ट करा रहीं हैं। थाना प्रभारी इंस्पेक्टर सुदेश के अनुसार पिछले 7 माह में 250 महिलाओं ने शिकायत की जिसमें 80 शिकायतें मोबाइल से सम्बन्धित हैं।

मोबाइल इस्तेमाल पर टोकने से थाने पहुंच रहीं महिलाएं, ससुराल भी छोड़ने को तैयार

7 माह में 245 में से 80 मोबाइल संबंधी शिकायतें

इन सब समस्याओं का कोई समाधान नहीं दिखता, पर इतना तो किया जा सकता है कि अनावश्यक मोबाइल प्रयोग से बचें, लगातार मोबाइल का प्रयोग न करें, बच्चों को भी प्यार से समझायें कि जीवन के लिये पढ़ाई और स्वास्थ्य जरूरी है मोबाइल नहीं। सोशल मीडिया का उपयोग कम करें तो इन समस्याओं से बचा जा सकता है।

श्रीराम की कथा

कथा सुनो पुराण की

राम और लक्ष्मण दोनों भाईयों में बहुत प्रेम था। राम को लक्ष्मण पर इतना स्नेह था कि वे लक्ष्मण को देखे बिना एक क्षण भी नहीं रह सकते थे और लक्ष्मण भी अपने बड़े भाई से प्राणों से अधिक प्रेम करते थे। उनके इस प्रेम की चर्चा स्वर्ग के देवों में भी होती थी। रत्नचूल और मृगचूल नामक देवों उनके इस प्रेम की परीक्षा लेने का विचार किया और दोनों अयोध्या आये। श्रीराम के महल में विक्रिया की जिससे रानियों के जोर-जोर रोने की आवाज आने लगी जिसे सुनकर सभी मंत्री, पुरोहित, द्वारपाल अपना मुंह नीचा करके लक्ष्मण के पास आये और लक्ष्मण से कहा हे नाथ श्रीराम का स्वर्गवास हो गया है। श्रीराम के स्वर्गवास का समाचार सुनकर लक्ष्मण 'हाय' शब्द कहकर प्राण छोड़ दिये। देवों ने लक्ष्मण की मृत्यु को देखा और यह कहकर वापस चले गये इनकी मृत्यु हमारे ही निमित्त से होना थी।

लक्ष्मण की पत्नियों जोर-जोर से रोते हुये कहने लगीं - हे नाथ! हमसे इस तरह न रूठो, जल्दी उठो। वे पत्नियाँ वीणा, बांसुदी आदि बजाकर लक्ष्मण को प्रसन्न करने का प्रयास करने लगीं। उधर लक्ष्मण के मृत्यु का समाचार सुनकर श्रीराम को तो विश्वास ही नहीं हुआ वे भागे - भागे लक्ष्मण के पास आये और लक्ष्मण के शरीर के अपने गले से लगा लिया। बोले - आज मेरा भाई मुझसे नाराज हो गया है, हमेशा प्रसन्न रहने वाला लक्ष्मण आज शांत क्यों है ? बार - बार हिलाने पर भी जब लक्ष्मण नहीं उठे तो वे स्वयं बेहोश गये। ये सारी घटना देखकर श्रीराम के पुत्रों को वैराग्य हो गया और उन्होंने अपने पिता श्रीराम को नमस्कार कर मुनि दीक्षा ले ली।

सुग्रीव आदि मित्रों ने राम को समझाया कि हे प्रभो! आप शोक को छोड़ें, लक्ष्मणजी की मृत्यु हो गई है, अब उनके शरीर को अग्नि में समर्पित करना चाहिये। इतना सुनकर श्रीराम ने क्रोध आ गया और बोले - आप लोग अपने भाई, पत्नी, पुत्रों के शरीर में आग लगाओ। मेरा भाई मरा नहीं है। श्रीराम अपने मृतक

भाई लक्ष्मण के शरीर को कंधे पर घूमने लगे। यह देखकर दो देवों को श्रीराम को संबोधन करने का भाव आया। ये देव पूर्व पर्याय में कृतान्तवक्र सेनापति और जटायु के जीव थे। वे राम के सामने आये और सूखे वृक्ष में पानी डालने लगे, उन्होंने मरे हुये बैल को हल में बांधकर खेत में चलाना चाहा, घी निकालने के लिये पानी को मथने लगे, तेल निकालने के लिये रेत को मशीन में डालने लगे। इस प्रकार पागलों की तरह की क्रियायें करने लगे।

यह देखकर श्रीराम ने उनसे कहा - अरे मूर्खो! आप दोनों पागलों के समान कार्य क्यों कर रहे हो ? इससे क्या लाभ होगा ? तो देवों ने कहा - आप भी तो अपने मृतक भाई की देह को जीवित मान रहे हो, उसे वस्त्र और आभूषण पहनाते हो। श्रीराम बोले - मेरे भाई के बारे अशुभ शब्द मत कहो। तभी जटायु का जीव किसी मनुष्य की मृत देह को कंधे पर लेकर आया। यह देखकर श्रीराम ने कहा - आप मृत मनुष्य की देह को कंधे पर रखकर क्यों घूम रहे हो? तब जटायु के देव जीव ने कहा - प्रभो! आपको हमारा राई बराबर दोष मेरू के समान देख रहें हैं और स्वयं मेरू समान दोष को राई के समान देख रहे हैं। हम आपके ही आश्रय में रहने वाले पूर्व भव के जीव हैं। आपसे पूर्व भव के स्नेह के कारण आपको संबोधन करने आये हैं।

देवों की बात और शास्त्रों के वचन सुनकर राम को जाग्रति आ गई और श्रीराम शोक छोड़कर लक्ष्मण के दाह क्रिया करने को तैयार हुये। विभीषण, विराधित, सुग्रीव आदि समस्त विद्याधर और नगर के निवासियों ने नारायण लक्ष्मण की मृत देह को कपूर आदि सुगन्धित द्रव्यों से सरयू नदी के किनारे दहन किया।

बाद में महल में आकर श्रीराम अपने छोटे भाई शत्रुघ्न से बोले - हे शत्रुघ्न! मैं मुनिव्रत धारण कर सिद्धपद को प्राप्त करना चाहता हूँ अतः अब राज्य को तुम संभालो। तब शत्रुघ्न ने कहा - हे तात! मुझे राज्य की कोई अभिलाषा नहीं है। संसार के काम, भोग, मित्र आदि से आज तक कोई तृप्त नहीं हुआ, इसलिये मैं भी आपके साथ मुनिव्रत धारण करुँगा।

श्रीराम ने शत्रुघ्न को विरक्त देखकर लक्ष्मण के पुत्र अनंग को राज्य दिया और मुनिदीक्षा लेकर आत्म साधना पूर्वक कर्मों को नष्टकर निर्वाण पद की प्राप्ति की।

प्रश्न -1. मंदिरों या धार्मिक जुलूसों में समक्ष बीन बजाने या सपेरे का नृत्य करना उचित है क्या ?

उत्तर - भगवान के सामने भक्ति नृत्य ही होना चाहिये। सपेरा नृत्य तमाशे का नृत्य है। भक्ति या वैराग्यपरक नहीं है। इससे लोगों को राग उत्पन्न होता है।

प्रश्न - 2. सातवें नरक के नीचे इतर निगोद है नित्य निगोद ?

उत्तर - दोनों तरह के निगोद तीनों लोकों में पाये जाते हैं। नरक के नीचे भी दोनों तरह के निगोदिया जीव पाये जाते हैं।

हमारे गौरव

अमर शहीद मोतीचन्द शाह

अमर शहीद मोतीचन्द शाहजी का जन्म 1880 में सोलापुर जिले के करकल ग्राम में संतोष वृत्ति व दयालु अंत:करण के धनी तथा न्याय से आजीविका कमाने वाले सेठ पदमसी के यहाँ हुआ।

अल्पायु में ही पिता का वियोग होने से मराठी की चौथी कक्षा तक अध्ययन करने के बाद पेट भरने के लिए मजदूरी करने लगे, परन्तु प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ज्ञान पिपासु मोतीचन्दजी अध्ययन करते रहे। व्यायाम करना, तैरना, लाठी चलाना आदि के साथ-साथ देशभक्तों के चरित्रों को पढ़ने की उन्हें विशेष रुचि थी। देश की क्रांति से संबंधित अपने मित्र देवचन्दजी के साथ वे लोकमान्य तिलक द्वारा प्रारम्भ किये गये 'स्वदेशी आंदोलन' में जाते थे, जिसके अंतर्गत सभाओं में स्वतंत्र भारत की घोषणा व 'वंदे मातरम्' का जयघोष होता है।

उन्होंने अनेक स्थानों पर 'बालकोत्तेजक समाज' की स्थापना की। वे विद्यार्थियों के बीच देश-विदेश में घटने वाली घटनाओं के बारे में बताते तथा विदेशी वस्त्रों का प्रयोग नहीं करना, विदेशी शक्कर नहीं खाना आदि प्रतिज्ञायें कराया करते थे।

जैनकुल में जन्म होने के कारण भोगों के प्रति उनकी विरक्ति स्वाभाविक ही थी। जीवन की साधना के बीच 'ब्रह्मचर्य ही उत्तम साधना है' - इस विचार पूर्वक उन्होंने आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया।

'दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभा' सांगली अधिवेशन में पंडित अर्जुन लाल सेठी के सम्मान व राष्ट्रसेवा की भावनापूर्ण व्याख्यान से प्रभावित होकर वे जयपुर में उनके विद्यालय में पढ़ने हेतु पहुँच गए तथा बाद में क्रांतिकारी दल में सम्मिलित हो गए।

एक बार जेल में दशलक्षण पर्व में दस उपवासों का कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि ये धार्मिक व्रत उस कठोर जीवन के लिए तैयारी ही हैं, जो राष्ट्रीय सेवक के लिए आवश्यक है। जैनधर्म में जो बाईस परीषह (भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, निन्दा-प्रशंसा आदि बाईस परिस्थितियों को समता से सहना) बताए गए हैं, उन सभी को सानन्द सहने वाला और राष्ट्र को आजाद करने के काम में लगे रहने वाला ही सच्चा राष्ट्र सेवक, सच्चा साधु व सच्चा त्यागी है।

पुलिस को जयपुर के विद्यालय में संगठित क्रांतिकारी दल की खबर मिली जिससे उनको गिरफ्तार करके कोर्ट में फाँसी की सजा सुना दी गई।

जेल में अपने अंतिम दिनों में उन्होंने रक्त से एक पत्र अपने मित्रों के नाम लिखा था। उनकी अंतिम इच्छा थी कि उन्हें फाँसी से पूर्व जैन प्रतिमा के दर्शन कराए जाएँ तथा दिगम्बर (नग्न) अवस्था में फाँसी दी जाए। जेल के नियमों के प्रतिकूल होने के कारण यह संभव नहीं हुआ, परन्तु उनके एक साथी ने प्रातः 4 बजे से पूर्व ही भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति के दर्शन करा दिए थे। उन्होंने सामायिक, तत्त्वार्थसूत्र तथा समाधिमरण का पाठ भी किया/सुना था।

फाँसी की रस्सी को उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक आलिंगन किया। मृत्यु के समय तक बलिदान की खुशी में उनका वजन कई पौण्ड बढ़ चुका था।

अपने इस वफादार शिष्य की मृत्यु पर सेठीजी को बहुत सदमा पहुँचा और उनकी स्मृति में सेठीजी ने अपनी कन्या का विवाह महाराष्ट्र के युवक से इस भावना से कर दिया कि 'मैंने जिस प्रान्त का सपूत देश को बलि चढ़ाया है, उस प्रान्त को अपनी कन्या अर्पण कर दूँ। सम्भव है उससे भी कोई मोती जैसा पुत्र रत्न उत्पन्न होकर देश पर न्यौछावर हो सके।'

अब नहीं छपवाऊँगा

अरे परिणय, कहाँ भागे जा रहे हो?

अरे अंकल, जय जिनेन्द्र। आपको तो पता ही है कि बहन की शादी है उसी की तैयारियों में लगा हूँ।

हाँ भाई, तैयारियाँ तो बहुत करनी पड़ती हैं। मेरे लायक कोई काम हो तो जरूर बोलना।

अंकल, एक काम तो है। बस, जरा शादी कार्ड का मेटर चेक कर लीजिये।

ये छोटा सा काम तो तुम ही कर सकते हो।

नहीं अंकल। बात है कि मैं इंग्लिश मीडियम में पढ़ा हूँ तो मेरी हिन्दी जरा वीक है। आप तो संस्कृत के टीचर रहे हैं और पाठशाला भी पढ़ाते हैं।

लाओ लाओ, मैं 5 मिनिट में चेक कर देता हूँ।

(5 मिनिट बाद) बाकी तो मैंने ठीक कर दिया है पर एक सुझाव है यदि अच्छा लगे तो मान लेना।

अरे अंकल, आप बताईये न। मैं भी यही चाहता हूँ कि शादी कार्ड में गल्ती न हो।

बस परिणय, इतना ही कहना था कि ये तुमने महावीराय नमः और 'मंगलं भगवान वीरो' श्लोक लिखा है, वह मत छापो।

आपकी बात कुछ समझ नहीं अंकल। यह तो अपने जैन धर्म की पहचान है और जैन समाज के सभी कार्डस् में ऐसा ही छपता है।

जो हमेशा से हो रहा हो वो हमेशा सही तो नहीं सकता न.....।

लेकिन अंकल, इसमें गलत क्या है ?

जरो सोचो परिणय, भगवान महावीर हमारे पूज्य तीर्थंकर हैं और यह श्लोक भी जिनवाणी का अंश है और यह कार्ड लोग देखकर कचरे में फेंक देते हैं या रद्दी में बेच देते हैं और इसके अविनय का फल हमें लगता है।

लेकिन हमारी पहचान का क्या ?

परिणय, क्या केवल भगवान के नाम से होती है अरे तुम्हारा नाम भी छपेगा न कार्ड में, उससे ही पहचान हो जायेगी और बेटा, जिसके यहाँ कार्ड देने भेजते हो उसे तो पता ही है न कि कार्ड भेजने वाला कौन है ?

हाँ, ये बात तो है।

तो फिर जिनवाणी के अविनय का पाप क्यों बांधना? वैसे ही हमारे जीवन में पाप कितने अधिक होते हैं और पुण्य के काम कितने कम और यह बिना मतलब का पाप।

अंकल, आपने बहुत सही बात पर ध्यान दिलाया तो भगवान का नाम लिखना कैंसल और आगे से कभी नहीं लिखवाऊँगा।

ये हुई न बात।

– विराग शास्त्री

खान-पान

बाजार का भोजन
ना बाबा ना ...

बाजार का भोजन अभक्ष्य तो है ही साथ जीवन को भी खतरे में डाल सकता है। पिछले दिनों की कुछ घटनाओं ने एक बार चेतावनी दी है कि जीभ के स्वाद के लोभ में अपने जीवन से खिलवाड़ मत करो। यह मनुष्य पर्याय यूं ही बरबाद करने के लिये नहीं मिली बल्कि संयम से रहकर आत्मकल्याण के लिये मिली।

केक में निकली मरी छिपकली - जबलपुर के बेलबाग थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति ने अपने बच्चे के जन्मदिन पर बाजार से केक लिया और घर पर जाकर केक को देखा तो उसमें मरी हुई छिपकली देखकर दंग रह गया। इसकी पुलिस रिपोर्ट की गई और केक की दुकान पर कार्यवाही की गई।

अमूल आईसक्रीम में कनखजूरा - नोएडा निवासी श्रीमति दीपा देवी ने 17 जून ऑनलाईन अमूल आईसक्रीम आर्डर की। अमूल कम्पनी की वैनिला मैजिक पलेवर आईसक्रीम 195 रुपये की आई। आर्डर आने के बाद उसे खोलकर देखा तो उसमें मरा हुआ कनखजूरा दिखाई दिया। उन्होंने इसकी शिकायत की तो कम्पनी उनके रुपये वापस कर दिये पर अपनी गल्ती नहीं मानी।

थ्री स्टार रेस्टारेन्ट के पनीर में हड्डी - उत्तरप्रदेश के अमरोहा नगर के तीन बार सांसद रहे श्री एक शाकाहारी होटल में भोजन के लिये गये और उन्होंने भोजन में पनीर की सब्जी का आर्डर दिया। उन्होंने भोजन करना शुरु भी कर दिया। कुछ देर बार उन्हें पनीर कुछ कड़क लग रहा था तो उन्होंने हाथ पनीर को छूकर देखा तो उनके होश उड़ गये, उसमें किसी जानवर की हड्डी थी। शाकाहारी सांसद महोदय यह देखकर बहुत गुस्सा हुये और उन्होंने पुलिस बुलाकर कानूनी कार्यवाही करवाई।

फालूदा में कीड़ा - लखनऊ के प्रसिद्ध माल लूलू मॉल में एक परिवार रात को पहुँचा और उन्होंने फालूदा आईसक्रीम मंगवाई। खाते - खाते उन्हें उसमें कीड़ा दिखाई दिया उन्होंने तत्काल मैनेजर को बुलाकर कीड़ा दिखाया तो मैनेजर माफी मांगने लगा।

इतनी घटनायें आंखें खोलने के लिये पर्याप्त हैं।

शेष निर्णय आपका है .....!

चहकती चेतना

जिनदेशना
प्रश्नमंच प्रतियोगिता

इन प्रश्नों के उत्तर खोजिये और इसे पूरा भरकर इसकी फोटो खींचकर हमारे 9752756445 नम्बर पर भेज दीजिये पाइये पुरस्कार। **10 से अधिक सही उत्तर प्राप्त होने पर ड्रा द्वारा 10 विजेताओं को चयन किया जायेगा। पुरस्कार पोस्ट द्वारा भेजें जायेंगे।**

1. जिनके गिरने से शिला टूटकर चकनाचूर हो गई और वे श्रीशैल के नाम से विख्यात हुये ---------
2. शास्त्र लिखते समय गर्दन टेढ़ी हो जाने से जिनका नाम वक्रग्रीवाचार्य प्रसिद्ध हुआ -----
3. जो भद्रबाहु के शिष्य थे और मुरा के पुत्र होने से मौर्य कहलाये ---------
4. जनक की पुत्री होने से जिनका नाम जानकी नाम प्रसिद्ध हुआ----------
5. सृष्टि की आदि में उत्पन्न होने के कारण जो आदिपुरुष के नाम से विख्यात हुये -------
6. तीनों लोकों का जो मानदण्ड है अतः मेरु नाम प्रसिद्ध हुआ उसका पूरा नाम - ---------
7. जिन्होंने सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका नाम का ग्रन्थ लिखा - ----------
8. विदेह क्षेत्र जाकर सीमंधर भगवान के दर्शन करने वाले आचार्य - ----------
9. आगामी चौबीसी में तीर्थंकर बनने वाले एक प्राचीन आचार्य ----------
10. एक हाथी का नाम जो भरत की बात सुनकर वैरागी हो गया ----------

नाम ----------

पिता का नाम ----------

नगर नाम----------

मोबाइल नं. ----------

चहकती चेतना सदस्यता क्रमांक .....

(सदस्यता क्रमांक पत्रिका के लिफाफे पर है।)

जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

जिनदेशना द्वारा तत्वप्रचार की गतिविधियों के अन्तर्गत मध्यप्रदेश के 30 नगरों में एक साथ जिनदेशना सामूहिक बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। 28 मई से 4 जून तक आयोजित इस शिविर में 55 विद्वानों के माध्यम से लगभग 2200 बच्चों ने शिविर का लाभ लिया। यह शिविर श्रेष्ठी श्री बिमलकुमार जैन की तृतीय पुण्य स्मृति में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई, श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला मुम्बई, श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट, साधना नगर, इंदौर और श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस शिविर में डॉ. बासन्ती बेन शाह मुम्बई, श्री वज्रसेनजी जैन परिवार कुन्दकुन्द अपार्टमेन्ट, लश्कर, ग्वालियर और श्री जयन्तीलाल मूथा कोलकाता की ओर से किट और सामग्री का वितरण किया गया। शिविर में श्रीमति कुसुमजी बिमलजी, श्रीमति विभा रजनीशजी, श्रीमति कोमल नीरजजी दिल्ली परिवार, श्री सिद्धार्थ श्रेणिकजी सुपुत्र श्री विनयजी लुहाड़िया मुम्बई, श्रीमति शशि गुलाबचंदजी सागर आदि महानुभावों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

शिविर के निर्देशक के रूप में विराग शास्त्री, सह निर्देशक श्री आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, संयोजक श्री श्रेयांसजी शास्त्री अभाना श्री अमितजी अरिहंत भोपाल, श्री भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा, श्री अनिकेतजी शास्त्री भिण्ड ने अथक श्रम से शिविर को सफलता तक पहुँचाया।

सभी स्थानों के समाज एवं प्रभारी बन्धुओं ने शिविर की सफलता के लिये भरपूर योगदान दिया। शिविर का समापन दमोह में किया गया।

दमोह में प्रथम बार

जिनदेशना बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

भगवान महावीर कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट द्वारा दमोह नगर में प्रथम बार जिनदेशना आवासीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 1 जून से 5 जून तक आयोजित इस शिविर में 10 विद्वानों के माध्यम से लगभग 150 बच्चों ने शिविर में सहभागिता की। इस शिविर में जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण, वर्गवार कक्षाओं और सामूहिक कक्षा के साथ प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ. विवेकजी छिन्दवाड़ा, पण्डित आशीष जी टीकमगढ़, पं. ज्ञाताजी सिवनी, पण्डित अमित अरिहंत आदि विद्वानों ने अध्यापन कार्य किया। कार्यक्रम श्री विराग शास्त्री के निर्देशन में संपन्न हुआ।

पिड़ावा में गुरुवाणी मंथन शिविर के साथ अनेक आयोजन सम्पन्न

राजस्थान की धर्म नगरी पिड़ावा में गुरूवाणी मंथन शिविर के आयोजन के साथ अनेक आयोजन संपन्न हुये। दिनांक 6 जून से 11 जून तक आयोजित इस कार्यक्रम में श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान, आध्यात्मिक शिविर, श्रुतपंचमी महोत्सव, पंचकल्याणक महोत्सव के पूर्व प्रतिमाओं की अगवानी और पंचकल्याणक के पात्रों का सन्मान किया गया। इस कार्यक्रम में पण्डित रजनीभाई दोसी, ब्र.नन्हे भाई सागर, पण्डित अजितजी अलवर, पं.संजयजी जेवर आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित नगेशजी के मार्गदर्शन और श्री विराग शास्त्री के निर्देशन और श्री अमित 'अरिहंत' भोपाल के सहनिर्देशन में संपन्न हुये। कार्यक्रम में स्थानीय विद्वानों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

देवलाली में 26वाँ बाल संस्कार शिविर सम्पन्न

विगत 25 वर्षों से अनवरत चल रहे बाल संस्कार शिविर की श्रृंखला में 26वाँ शिविर देवलाली के कहान नगर में दिनांक 13 से 19 मई तक सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस शिविर में लगभग 300 बच्चों ने लाभ लिया। कार्यक्रम श्री वीनूभाई शाह और श्री उल्लासभाई जोबालिया के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

अभूतपूर्व रहा

जिनदेशना कंठपाठ महोत्सव

जिनदेशना द्वारा बच्चों जिनधर्म की रुचि जाग्रत करने की भावना से जिनदेशना कंठ पाठ महोत्सव का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत मई माह में गाथायें, स्तोत्र, स्तुति, भजन, पूजा आदि लगभग 30 विषय याद करने के लिये दिये गये। इसमें लगभग 380 बच्चों ने अपनी योग्यतानुसार विषय याद किये और जून माह के अंत में ऑनलाईन माध्यम से याद किये हुये विषय सुनाये। इस अभिनव प्रयोग से बच्चों में एक नई स्फूर्ति का संचार हुआ। इसमें लगभग 200 बच्चों को पोस्ट द्वारा पुरुस्कार भेजे गये। इस कार्यक्रम में श्री जैन बहादुर जैन कानपुर, श्रीमति आरती अशोक घिया मुम्बई, श्रीमति नयना बेन हर्षदभाई मुलुण्ड-मुम्बई, श्री रमेश पी.शाह इंदौर, श्री राजीव कुमार नीरजा जैन आगरा, श्री नयन शास्त्री हैदराबाद, डॉ. विमला जैन नागपुर, श्रीमति पूर्णिमा बेन उल्लास भाई जोबालिया मुम्बई, श्रीमति मधु ब्रजलाल जैन मुम्बई, श्रीमति भविशा आत्मदीप भायाणी चेन्नई ने सहयोग प्रदान कर इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

कार्यक्रम में पं. आतम शास्त्री खड़ैरी, पं. सचिन शास्त्री सागर, पं. प्रियम शास्त्री बड़ा मलहरा, पं. शुभांशु शास्त्री बक्स्वाहा और श्रीमति पूजा प्रियम शास्त्री रहली ने सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया।

हमारे मुनिराज

बंदर, भालूजी घबराये,
हिरण गाय भी दौड़ लगाये ।
भाग रही थी मौसी बिल्ली,
सहमी रंग–बिरंगी तितली ।।

हाथी दादा पूछे उनसे–
क्या जंगल में प्रलय है आया ?
या कोई तूफान है आया,
हाथ जोड़कर तोता बोला–
एक शिकारी जंगल आया ।।

तुमको अपनी जान है प्यारी,
करो भागने की तैयारी ।
हंसकर दादा हाथी बोले–
तुम प्राणी सब भोले भाले ।।

परम दिगम्बर मुनि हैं आये,
धर्म अहिंसा पाठ सिखाये ।
निर्भयता का पढ़ लो पाठ
मुनि चरणों में करेंगे ठाट ।

कर्ता कौन

सूरज दादा कौन है लाता ?
उसे समय पर कौन छिपाता ?
चंदा मामा की मुस्कान,
दिन और रात का कर्ता कौन ?
फूल खिलाये जग में कौन ?
पानी को बरसाये कौन ?
सागर से बादल बन जाते,
कितने काम स्वयं हो जाते ।।

जन्म मरण का चक्र है चलता,
और बुढ़ापा क्यों आ जाता ?
ऐसे उठते प्रश्न अनेक,
इन सबका उत्तर है एक ।।
स्वयं वस्तु करती परिणाम,
पर में नहीं जीव का काम,
ज्ञाता दृष्टा आतमराम,
इसमें करना है विश्राम ।।

जन्म दिवस की मंगल शुभकामनायें

जन्म मरण के अभाव की भावना में ही जन्म दिवस मनाने की सार्थकता है।

प्रज्ञा द्वारा **रचित** है, ज्ञानी का यह देश ।
जन्म मरण का क्षय करो, छोड़ो सर्व कलेश ।।

रचित कान्ति जैन, दुर्ग 17 जुलाई

आतम ही परिपूर्ण है, अपना आतम एक,
प्रशम भाव धारण करो, तुम प्यारे **संवेग** ।

संवेग प्रशम जैन, छिंदवाड़ा, 24 जुलाई

भेद ज्ञान की **विधि** हो, हो जिन आगम ज्ञान ।
यही भावना जन्म दिवस पर, बनो सिद्ध भगवान ।।

विधि दिलीप चंकेश्वरा, पुणे 22 जुलाई

तीन लोक में श्रेष्ठ हैं, पंचप्रभु जगदीश ।
भेद ज्ञान निधि प्राप्त हो, ऐसा करो **अवीश** ।।

अवीश लोकेश जैन, घाटकोपर, मुंबई 25 जुलाई

जैनी आपका नाम है, रखना इसका मान ।
श्री जिनेन्द्र के मार्ग पर चलो, बनो भगवान ।।

जैनी मुकेश जैन, मुम्बई 16 जुलाई

सिद्धों के संग में रहो, यह अपना अधिकार ।
अधिकृत भाओ भावना, हो भव सागर पार ।।

अधिकृत जैन, मुम्बई ८ जुलाई

चेतन ! कर्म को उदय विचारो

पंडित जितेन्द्र शास्त्री राठी को जिनदेशना ने दिया जिनधर्म प्रभावक का सम्मान

विगत लगभग 20 वर्षों से अनवरत वीतरागी देव शास्त्र गुरु की मंगल परंपरा में आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा उद्घाटित तत्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में श्रेष्ठ भूमिका का निर्वाह कर रहे पुणे निवासी पं. जितेन्द्र शास्त्री को जिनधर्म प्रभावक का सम्मान समर्पित किया गया। लोनावला की जिनदेशना यूथकन्वेंशन के दौरान परमागम प्रभावना ट्रस्ट पुणे एवं जिनदेशना समिति द्वारा उन्हें सम्मान स्वरुप प्रशस्ति, अंगवस्त्र और शॉल के साथ 21000/- की राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर उनकी धर्मपत्नि सुचिता जी का भी सम्मान किया गया।

आपका संबल हमारा प्रयास

हमारी निम्न योजनाओं में सहयोग प्रदान कर जिनशासन प्रभावना में सहयोगी बनें।

शिरोमणि परम संरक्षक	1,00,000/- रु.
परम संरक्षक	51,000/- रु.
संरक्षक	31,000/- रु.
परम सहायक	21,000/- रु.
सहायक	11,000/- रु.
सहायक सदस्य	5,000/- रु.
सदस्य	1,000/- रु.

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि "चहकती चेतना" के नाम से **"चहकती चेतना"** के पंजाब नेशनल बैंक, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में IFSC : PUNB0193700 जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं।

PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं।

जिनदेशना यूथ कन्वेंशन लोनावाला की झलकियाँ

दिनांक 27 जून से 30 जून 2024

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट विलेपारला, मुम्बई एवं
कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, उज्जैन के तत्वावधान में
श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट तीर्थधाम ज्ञानोदय, भोपाल द्वारा तृतीय एवं जिनदेशना द्वारा
पंचम
जिन देशना
यूथ
कन्वेन्शन
इस बार फिर कुछ नया होगा...
LIVE ON
जिन देशना
by young for young...
युवाओं के लिये अनूठा प्रयोग
पधारिये एक नये अहसास के लिये
मंगल सान्निध्य :
■ डॉ. मनीषजी शास्त्री, मेरठ
■ श्री संजय जी शास्त्री, कोटा
■ श्री विपिनजी शास्त्री, नागपुर
■ श्री अभयजी शास्त्री, खैरागढ़
कार्यक्रम स्थल :
तीर्थधाम ज्ञानोदय
विदिशा-भोपाल रोड,
दीवानगंज, जिला-रायसेन
निर्देशक : विराग शास्त्री, जबलपुर 9300642434
संयोजक : अमित अरिहंत, भोपाल 9588001360
शुक्रवार से सोमवार
23 से 26
अगस्त 2024
आयु सीमा : 18 वर्ष से 50 वर्ष तक
रजिस्ट्रेशन की लिंक प्राप्त करने के लिए 9752756445 पर what'sapp द्वारा संपर्क करें
संपर्क : अर्पित शास्त्री -7869875108, मनीष शास्त्री - 8087216959

श्रद्धा, भक्ति और आस्था के केन्द्र
शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेद शिखरजी
नवम
नवलब्धी
स्वरूपा
पधारिये महाशिविर में...
कुन्द-कुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान
द्वारा आयोजित
पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के दिव्य प्रभावना योग में
प्रेरणापुंज दादाश्री पंडित विमलचंदजी झांझरी के मंगल आशीष से
आमंत्रण
2024
सम्मेद
शिखर
KKPPS
सोमवार, दिनांक 7 अक्टूबर से रविवार 13 अक्टूबर
▲ पूज्य गुरुदेव श्री के अध्यात्म शंखनाद की गूंज
▲ विशिष्ट विद्वानों द्वारा तत्वज्ञान के प्रांजल नीर से आत्म प्रक्षालन
▲ धर्मचक्र से चतुर्गति चक्र मिटाकर सिद्धचक्र में शामिल होने का मंगल अवसर
▲ आत्मीयता से सुसज्जित साधर्मी मेला
▲ नवलब्धि मंडल विधान द्वारा ज्ञान आराधना
▲ तत्वचर्चा वर्तमान सिद्धप्रभु के साथ भावी सिद्ध भगवान की
आत्म कल्याण की राह पर अनादि अज्ञान के विरुद्ध आंदोलन में
आप सभी आसन्न भव्य जीवराज सहभागी बनें।
निजात्मकेलि शिखर शिविर
एवं
बाल संस्कार ज्ञान-वैराग्य महोत्सव
आत्मीय निमंत्रण, सादर अनुरोध, भावभरी विनती एवं आग्रह भरा आमंत्रण ... स्वागत ... वन्दन ... अभिनन्दन ... पधारिये
चलो सम्मेद चलो ... सिद्धो के द्वार चलो .... हम है तैयार चलो .... हो ...
हम है तैयार चलो .... हो ...
हम है तैयार चलो .... हो ...